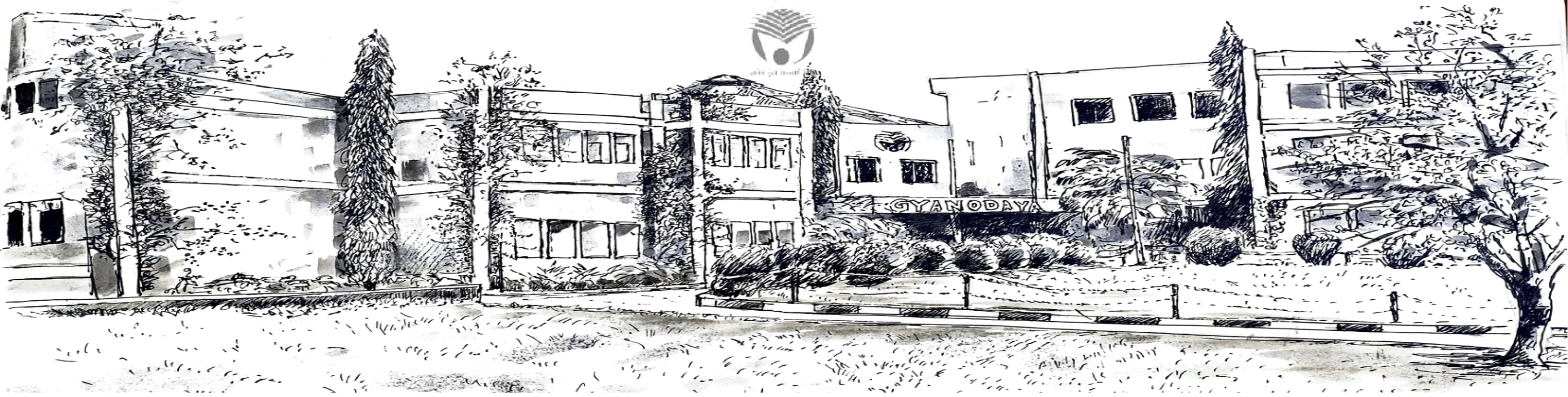


अंक १५
मार्च २०२३

# ज्ञानोदय प्रभा

## ज्ञानोदय प्रभा मार्च २०२३ अंक होली विशेषांक

## संपादकीय

होली की जब बात आती है तो बरबस ही रंग, गुलाल, पिचकारी गुझिया मिठाई, रंगे हुए चेहरे मन मस्तिष्क में तैरने लगते हैं और हमारी कल्पना को सतरंगी पंख लग जाते हैं | प्रेम स्नेह और सद्भावना का प्रतीक यह त्योहार सम्पूर्ण भारत में हर्षोल्लास से मनाया जाता है | होली भारत का अत्यंत प्राचीन पर्व है जो होली के अतिरिक्त होलिका, होलाका आदि नाम से भी जाना जाता था। वसंत की ऋतु में मनाए जाने के कारण इसे वसंत उत्सव और काम-महोत्सव भी कहा गया है। इस पर्व का वर्णन अनेक प्राचीन धार्मिक पुस्तकों में मिलता है। जैसे - मीमांसा-सूत्र, कथा गार्ह्य-सूत्र, नारद पुराण, भविष्य पुराण आदि | संस्कृत साहित्य में वसन्त ऋतु और वसन्तोत्सव अनेक कवियों के प्रिय विषय रहे हैं। सुप्रसिद्ध पर्यटक अलबरूनी ने भी अपने संस्मरण में होलिकोत्सव का वर्णन किया है। शाहजहाँ के समय में होली को 'ईद-ए-गुलाबी' या 'आब-ए-पाशी' कहा जाता था। अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र के बारे में प्रसिद्ध है कि होली के अवसर पर उनके मंत्री उन्हें रंग लगाने जाया करते थे। मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में वर्णित कृष्ण की लीलाओं में भी होली का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त प्राचीन चित्रों, भित्तिचित्रों और मंदिरों की दीवारों पर इस उत्सव के चित्र मिलते हैं। इस प्रकार होली का पर्व अत्यंत प्राचीन काल से हर्षोल्लास से मनाया जाता रहा है | सभी धर्म संप्रदाय के लोग इसे मनाते हैं | यही भारतवर्ष की खूबसूरती है| यूं तो हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में होली खेली जाती है | परन्तु बरसाने की होली सबसे प्रसिद्ध है | इसे लट्ठमार होली कहते हैं | यह होली फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाई जाती है। विभिन्न मंदिरों में पूजा अर्चना के पश्चात नंदगांव के लोग होली खेलने बरसाना में आते हैं और बरसाना के लोग नंदगांव में जाते हैं। इन लोगों को 'होरियारे' कहा जाता है। इस होली को भगवान श्रीकृष्ण, उनके साथी ग्वालबाल और गोपियों के मध्य होली खेलने की घटना से जोड़ा जाता है| वसंत पंचमी से ही ब्रज में होली का शुभारंभ हो जाता है| करीब ४० दिन चलने वाली ब्रज की होली का अंदाज ही अलग होता है | विश्व भर में एकमात्र ब्रज ही ऐसी जगह है जहां फूल, रंग, गुलाल, लड्डू, लठ्ठ आदि सभी चीजों से होली खेली जाती है, यही कारण है कि इसे देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं| मंदिरों में इस रंग और गुलाल में भक्त और भगवान दोनों सराबोर हो जाते हैं| पौराणिक कथाओं में होली की कहानी भक्त प्रह्लाद, पिता हिरण्यकश्यप और उनकी बहन के इर्द गिर्दघूमती है | जिसमें भक्त प्रह्लाद बच जाते हैं और होलिका जल कर भष्म हो जाती है | वास्तव में होलिका बुराइयों की और प्रह्लाद सद्‌गुणों के प्रतीक हैं | आइए हम अपनी होलिका रुपी बुराइयों को इस होली में दहन करें और प्रह्लाद रुपी सद्‌गुणों को अपनाएँ| हमारे जीवन में भी खुशियों के विविध रंगों का समावेश हो ऐसी शुभेच्छा है | आइए हम सारे गिले शिकवे भूलकर इस पवित्र त्योहार को और अनुपम बना दें|

# मार्च माह की गतिविधियाँ

## कार्य पुस्तिका का विमोचन

आज दिनांक- २१-०३-२०२३ दिन - मंगलवार को ज्ञानोदय विद्यालय के एल.के.जी. और यू.के.जी. के बच्चों के लिए ज्ञान UDAY की अपनी कार्य पुस्तिका का विमोचन किया गया, जो शिक्षा के क्षेत्र में एक रोमांचक, ऐतिहासिक और अभूतपूर्व कदम है।

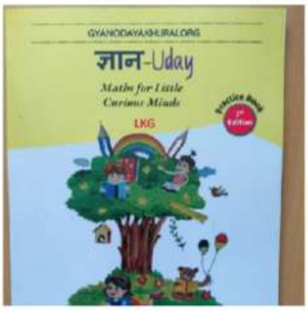

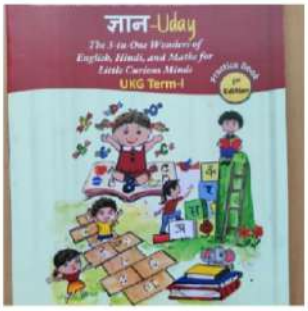

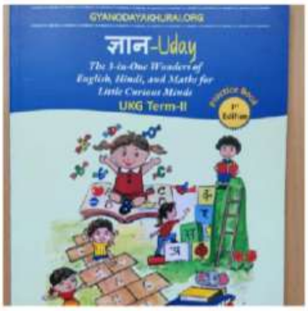


इस कार्य पुस्तिका का विमोचन विद्यालय के चेयरमैन श्रीमंत धर्मेन्द्र सेठ और प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ल द्वारा किया गया।

यह कार्यक्रम उत्साह और उमंग से भरा रहा। बच्चों ने इस अवसर पर खूब मस्ती की और कार्यक्रम का लुत्फ़ उठाया। ज्ञानोदय व खुरई नगर के इतिहास में पहली बार इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया गया | यह एक सुखद और ज्ञानवर्धक कार्यक्रम था, जो बच्चों को बस्ते के बोझ से मुक्ति दिलाकर उन्हें अपनी कल्पना की उड़ान भरने का मौका देगा।

## जन्मोत्सव

आप उम्र में भले ही छोटे हों, लेकिन आपका दिल बहुत बड़ा है! जन्मदिन मुबारक हो बच्चों। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, आपको मीठी और प्यारी यादों से नवाजा जाए। इसी सोच को ध्यान में रखते हुए दिनाँक २८ मार्च २०२३ मंगलवार को ज्ञानोदय के शिक्षकों ने पूर्व प्राथमिक विभाग में जन्मदिन समारोह का आयोजन किया। अन्य आयु समूहों की तुलना में स्कूली छात्रों के बीच जन्मदिन की यादों को इकट्ठा करने का उत्साह कहीं अधिक रहता है। इसी तरह हम भी बच्चों को उनके जन्मदिन के शुभ अवसर पर विशेष अनुभव कराने की कोशिश करते हैं। ज्ञानोदय स्कूल में जन्मदिन समारोह धूमधाम से मनाया जाता है और बच्चों को विशेष और मनभावन महसूस कराया जाता है। हम जन्मदिन के बच्चों को जन्मदिन का कार्ड और किताब उपहार में देते हैं। यह उन्हें विशिष्ट महसूस कराता है। हम इस जन्मदिन की गतिविधि को हर महीने लगातार कर रहे हैं। यह खूबसूरत यादों को संजोने और उन्हें उल्लेखनीय घटनाओं में बदलने के लिए हमारे कदमों में से एक है। इस गतिविधि में सभी बच्चों ने भाग लिया। उन्होंने इसका भरपूर लुत्फ़ उठाया। इस गतिविधि में, उन्होंने सीखा कि कैसे दूसरों की खुशी में खुश रहना है और कैसे अपने दोस्तों को खुश करना है। दूसरे शब्दों में, उन्होंने यह जान लिया है कि सुख का रहस्य दूसरों की प्रसन्नता है | इस खूबसूरत अवसर पर हम आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

**प्रभारी पूर्व प्राथमिक विभाग**

## मंदिर दर्शन का आयोजन

दिनांक 20 मार्च 2023 सोमवार को हमारे स्कूल ज्ञानोदय विद्यालय ने 'नर्सरी', 'एल.के.जी' और 'यू.के.जी.' छात्रों के लिए मंदिर यात्रा का आयोजन किया। यह शिक्षक और छात्रों के बीच संबंध और समझ विकसित करने और उनकी आध्यात्मिकता को बढ़ाने के लिए भी आयोजित किया गया था। इसके अलावा, उन्होंने टीम वर्क और अनजान जगह में एक-दूसरे से जुड़े रहने के तरीके भी सीखे।

**प्रभारी पूर्व प्राथमिक विभाग**

# साहित्यिकी

## विद्यार्थी कोना

### होली का उत्सव

होली का यह उत्सव आया
सबके मन में खुशियाँ लाया
सब जन लाते रंग गुलाल
और बाँटते सब में प्यार
रंग ,पिचकारी और गुलाल
हो गए सबके चहरे लाल
बच्चों का ये प्रिय त्योहार
इसमें न हो जीत और हार
सबके मन में खुशियाँ छाईं
होली की ये बेला आई
यह हमारी प्यार की बोली है
बुरा न मानो होली है |-

**अंशिका कक्षा ८ अ**

### भविष्य और उम्मीदें

वरना समय नहीं लगेगा आने में बेरोजगारी ||
सोचो अपने माता – पिता की |
क्या - क्या आश लगाए हैं, तुम्हारे सपनों की ||
वे सोचते हैं तुम्हारा भला | ना करो बर्बाद अपना अमूल्य वक्त |
ना करो अपना समय व्यर्थ ||
ना बनो पढ़ने में अहंकारी |
फिर तुम्हें क्यों लगता है बुरा ?
दिखावे की संस्कृति न अपनाओ
अपना भविष्य देखो और बनाओ ||
यह दुनिया स्वार्थों की यह देखे अपना काम |
फिर क्यों नहीं तुम बनाते अपना नाम ||
कुछ जीवन में करो और बनो |
अपने माँ – बाप का सपना सच करो ||
जब तुम कुछ करोगे और बनोगे
तब तुम्हें लोग खोजेंगे और अनुसरण करेंगे

**तनु यादव**
**कक्षा १० अ**

### भारत देश महान

भारत देश महान कहलाए
शान से ये झंडा लहराए
दुनिया भर में
ऊँचा पद ये पाए
भारत देश महान कहलाए
इस पर लोग मर मिट जाएँ
सबका ये दिल लुभाए
भारत देश महान कहलाए
इसकी राष्ट्र भाषा सबका दिल लुभाए
इसका राष्ट्र पक्षी सबसे सुन्दर कहलाए
भारत देश महान कहलाए

**-बीनू ठाकुर कक्षा ६ स**

### महापुरुषों के विचार

“जब गलती करने की स्वतंत्रता न हो ,तब तक स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है |”- -महात्मा गाँधी
“काम की अधिकता नहीं, अनियमितता व्यक्ति को मार डालती है |” महात्मा गाँधी
“कठोरता एवं आज़ाद सोच ये दो क्रांतिकारी होने के गुण हैं |” – भगत सिंह
“क्रांति में सदैव संघर्ष हो यह जरूरी नहीं और यह बम और पिस्तौल की राह नहीं है |” -भगत सिंह

**संकलन**
**-सूर्यांश ठाकुर कक्षा ६ स**

## जल

जल है कितना अनमोल
जन लो तुम इसका मोल
पानी बिना धरती सूनी
बिना पानी जीवन का नहीं है मोल
यह है प्रकृति का एक भाग
इसको नहीं करना बरबाद
पानी से बने हम और तुम
पानी से ही धरती बनी
पानी से ही पेड़ यहाँ
जान लो इसका मोल

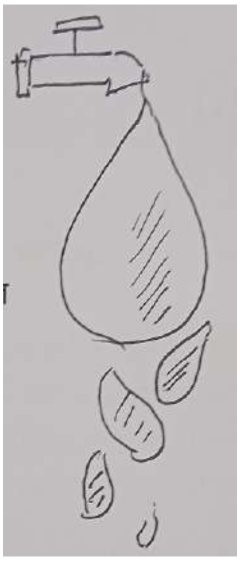

**- काव्या ठाकुर कक्षा ४ क**

## होली

रंगों का त्योहार होली है
खुशियों की खबर है होली
लाल  गुलाबी पीला देखो
पिचकारी भर- भर ले आओ
ख़ुशी का रंग सबको लगाएँ
दुश्मन को भी अपना बनाएँ

**-आराध्या  जैन  कक्षा ८ ब**

## ज्ञानोदय स्कूल हमारा

ज्ञानोदय स्कूल हमारा
ये है हमको सपनों से प्यारा
ज्ञान हमें ये देने वाला
सबसे अच्छा सबसे न्यारा
हम बच्चों का यही सहारा
हम बच्चों का यही है नारा
हम बच्चों का यही सहारा

**- आदी जैन कक्षा ६ ब**

## होली

होली आई होली आई
धूम मचाती होली आई
घर घर में खुशियाँ लाई
बच्चों की टोली आई
हाथ में पिचकारी आई
रंग गुलाल उड़ाती आई
होली आई होली आई
धूम मचाती होली आई

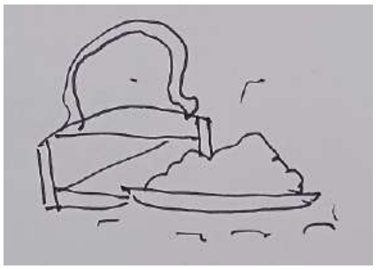

**आरुष गौर कक्षा ६ स**

## सैनिक सीमा की जान

हमारे सैनिक महान
रहते हमेशा सावधान
देश की जान
उनका साहस ऐसा
बचाते हमें हमेशा
चाहे भूकंप या बाढ़
सैनिक हैं महान

**मनवीर कुर्मी कक्षा ६ स**

## पहेलियाँ

1. बेशक न हो हाथ में हाथ ,जीता है वह आपके साथ
2. कमर बांध कोने में पड़ी ,बड़े सबेरे अब है खड़ी
3. काला घोडा सफ़ेद सवारी ,एक उतरा तो दूसरे की बारी
4. काले वन की रानी है ,लाल पानी पीती है |
5. हरी डिब्बी ,पीला मकान उसमें बैठे कालू राम

उत्तर – १.परछाई २. झाड़ू ३.तवा और रोटी ४. खटमल ५. पपीता

**संग्रह**

**– रिषभ अहिरवार कक्षा ७ स**

## ज़िन्दगी के रंग

ज़िंदगी के कई रंग हैं-
आसमान में तारे जितने,
आकाश में पक्षी जितने,
धरती में कण- कण जितने,
ज़िंदगी के अनगिनत रंग हैं|
दिलों में अरमान जितने,
आँखों में ख्वाब जितने,
इन ख्वाबों को सच करने की कोशिश अरमानो को
हकीकत में बदलने की
यही तो जीवन के
कुछ रंग बिरंगे रंग हैं|
आँखों में कभी गम तो कभी ख़ुशी के आंसू
कभी दुःख तो कभी तकलीफें और इन
सभी रंगों के बीच रंगी ज़िन्दगी रंग बिरंगी है|
कभी रिश्तों में कड़वाहट कभी झगड़े तो कभी
इन सभी को प्यार और एक मुस्कान से
सभी में अपनापन
यही तो ज़िन्दगी के रंग हैं|
कुछ मनपसंद तो कुछ नापसंद भी है,
पर, फिर भी हम इन्हीं रंगों में रंगे हैं|
ज़िंदगी के कई रंग हैं|
मैं, तुम हम सब तो ज़िन्दगी के इन्हीं रंग – बिरंगे रंगों से रंगे हैं-
होली के रंगों की ज़िन्दगी के कई रंग|

**-वैशाली सोनी**
**शिक्षिका**

## होली

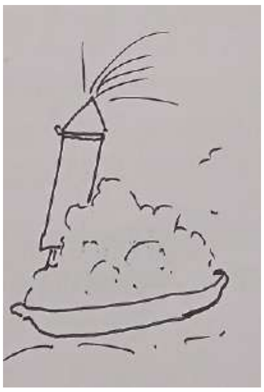

होली आई होली आई
रंगों भरी है होली आई
संग अपने रंगों की पिचकारी लाई
याद आया वो बचपन प्यारा
जब हर दिन लगता था न्यारा
उन दिनों में सबसे सुहाना
दिन था होली का मस्ताना
दिन भर मस्ती करते थे
बिना जान पहचान के भी
सब को रंगों में रंगते थे
सब के बेरंग जीवन में
सुहाने रंगों को भरते थे
"बुरा ना मानो होली है "
ये नारे ही बस गूंजा करते थे
काश लौट आए वो बचपन प्यारा
जब हर दिन लगता था न्यारा
जब हर दिन लगता था न्यारा।

**-मनप्रीत सलूजा**
**शिक्षिका**

## बिटिया

बिटिया है तो का ---?
खूब पढ़िएं, खूब लिखिएं
बिटिया है तौ का ?
हमऊँ आसमान छुइएं
झाड़ू लगइएं
गोल रोटी बनइएं
पृथ्वी गोल - गोल है
एऊँ तौ जानिए
बिटिया है तौ का
हमऊँ आसमान छुइएं
गइया चरइएं
खेत बखरइएं
संग - संग पर्यावरण का
ज्ञान भी बढ़इएं
बिटिया है तो का ---?
खूब पढ़िएं, खूब लिखिएं
अम्मा को भी काम करइएं
दाऊ को भी काम करइएं
देश की संस्कृति को आगे बढ़इएं
बिटिया है तौ का ---?
हमऊँ आसमान छुइएं

**आयुषी समैया**
**शिक्षिका**

## खेलो होरी

आयो फागुन खेलो होरी
दाग लगे न याद रहे
मिलजुलकर के बैर भुलाएँ
कोऊ न फरियाद करे
आयो फागुन खेलो होरी

आओ आओ प्रियवर आओ
प्रेम के रंग में तुम रंग जाओ
मन में मैल रहे न प्यारे
चादरिया बेदाग रहे
आयो फागुन खेलो होरी

छल और कपट लगी है ढेरी
इन्हे जलाएं करें न देरी
निर्मल- मन- प्रह्लाद बचाएँ
कपट-होलिका दाह करें
आयो फागुन खेलो होरी

सुनो ये चिड़ियाँ क्या कहती हैं ?
धरती माँ क्या - क्या सहती है ?
वतन की खातिर मिट गए हैं जो
उनको हम आबाद करें
आयो फागुन खेलो होरी

खेलो होरी प्यार के रंग से
खून की होली न बाबा न
मन से प्रीत करो जन - जन से
या मे ईश्वर वास करें
आयो फागुन खेलो होरी

गुझियाँ खूब पपरियाँ खाओ
ठंडाई को लुत्फ उठाओ
होली मुबारक हिन्द दुलारो
मन मयूर हिय नाच रहे
आयो फागुन खेलो होरी

**-डॉ कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव 'हमराही'**

## ये दुनिया

ये महलों, ये तख्तों, ये ताजों की दुनिया,
ये इंसान के दुश्मन समाजों की दुनिया,
ये दौलत के भूखे रवाजों की दुनिया,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है |
देश के उद्योग घरानों की दुनिया,
समाजवादी, कम्युनिस्ट, पूंजीवादी की दुनिया,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है |

कोरोना, इबोला, एच थ्री एन टू वायरस की दुनिया,
डायरिया, टाइफाइड, मलेरिया की दुनिया,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है |

ट्रंप, ओबामा, पुतिन की दुनिया,
जिनपिंग, किम जोंग उन की दुनिया,
एटम बम, मिसाइल, ए.के. सैतालिस की दुनिया,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है |

सचिन, विराट, युवराज की दुनिया।
सानिया, स्मृति, नीरज चोपड़ा की दुनिया
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है |

बाहुबली, लगान, ये पुष्पा की दुनिया,
थोर, आयरन मैन, पाइरेट्स ऑफ कैरेबियन की दुनिया,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है |

देश के राजनीतिज्ञों की दुनिया,
अनर्गल प्रलापों जुमलेबाजों की दुनिया,
ये रवीश, सुधीर, रजत की दुनिया
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है |

बिग बॉस, रोडीज, कपिल शर्मा की दुनिया,
टैबलेट, लैपटॉप, मोबाइल की दुनिया,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है |

व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर की दुनिया,
ये सेक्रेड गेम्स, मिर्जापुर, फर्जी की दुनिया,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है |

तुम्हारी है तुम ही संभालो ये दुनिया
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है |

**-श्री रुपेश मिश्रा**
**शिक्षक**

# फूल, रंग और रसायन

मार्च का महीना रंग रस और गंध इन तीनों का सहयोग है| बरबस ही फूल देखकर हम सभी प्रसन्न होते हैं किन्तु फूल नहीं रंग बोलते हैं।

होली के रंग फरवरी-मार्च के महीनों में पेड़ों से उतरकर हमारे आंगन में आ जाते हैं और फिर आंखों के रास्ते आहिस्ता आहिस्ता हमारे दिलों में उतरते जाते हैं | कई लाल नारंगी फूलों में कारेटेनॉइड नाम के पदार्थ होते हैं | फूलों की पंखुड़ियों को रंग देने वाले सबसे महत्त्वपूर्ण पदार्थों को एंथोसाइनिन कहा जाता है, जो इनका एक प्रकार है | फ्लेवोनॉयड्स जो मुख्य रूप से एंथोसाइनिन ही होते हैं | यह सभी पानी में घुलनशील है इसलिए इन से आसानी से रंग बन जाते हैं | एंथोसाइनिन पदार्थों की एक और विशेषता है, और वह यह है - इनका रंग, माध्यम की अम्लीय या क्षारीय प्रकृति पर निर्भर करता है जैसे - साइनिनअम्लीय माध्यम में लाल उदासीन माध्यम में जामुनी नजर आएगा और वही रंग छारीय माध्यम में नीला दिखाई देगा यानि फूलों का रंग इनमें पाए जाने वाले पिगमेंट और इनके पी एच दोनों पर निर्भर करता है यदि इनमें हम थोडा सा खाने का सोडा, चूना या नींबू मिला दे तो इनका रंग बदला जा सकता है।

आइए अब कुछ प्राकृतिक रंगों की बात करते हैं - जैसे कि टेशू का अंगार जिसे "फ्लेम ऑफ द फॉरेस्ट " भी कहा जाता है | अर्थात जंगल की लपट| जब यह लगते हैं तो, जंगल में हर कहीं ऐसा लगता है जैसे आग लगी हुई हो|

इस फूल को किंशुक भी कहा जाता है | अर्थात तोते की चोंच जैसी लाल रंग | पूरे भारत में आज भी कृष्ण मंदिरों में टेसू के फूलों के रंग से ही होली खेली जाती है|

अगला है – केसरिया बालम हरसिंगार | इसे कैसे भूला जा सकता है? जिसके सितारे जैसे फूल छः, सात पंखों से मिलकर बनते हैं, जिनमें एक लंबी केसरिया शलाका होती है| श्वेत पंखुड़ियाँ मोम जैसी चिकनी होती हैं | इसका एक और नाम है - 'कोरल जैसमिन' जो मूंगे के रंग की डंडी के कारण दिया गया है | उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार में आज भी लड़कियाँ इसके फूलों के रंग से अपने वस्त्र रंगती है | इससे वस्त्रों में हल्का नारंगी, पीला रंग और भीनी - भीनी सुगंध भर जाती है | फूलों के डंठल को सुखाकर केसरिया रंग बनाया जाता है जिससे यह भात में उपयोग किया जाता है | यह एक सुरक्षित प्राकृतिक खाद्य रंग है |

पलाश से मिलते जुलते रंग का एक और फूल हमारे आसपास मिलता है, जिसका नाम है - ढोल ढाक या पलाश | यह सभी शुष्क जंगलों में खूब मिलता है| इसके फूल चमकदार नारंगी रंग के होकर झुंड में खिलते हैं और यह दिए की लौ के समान लगते हैं | इसके पेड़ के तने पर कांटे होते हैं | इसी कारण इसका नाम गुलदस्ता भी है | यह भी उसी के कुल का है और वैसा ही केसरिया रंग देता है।

आज के जमाने में प्राकृतिक रूप से होठों को रंगने के लिए लिपस्टिक ट्री की भी बात करते हैं| इसे रक्तबीजा या सिन्दुरिया के नाम से भी जाना जाता है | हल्के गुलाबी फूल समूह इसमें आते हैं | इसके बीच से चटकीला लाल नारंगी रंग मिलता है, जिसका लिपस्टिक बनाने में उपयोग किया जा सकता है | जो कि मूलतः ब्राजील का है | वहाँ के आदिवासी लोग इसे शरीर पर लगाते हैं| इसके बीजों का सुगन्धित नारंगी लाल रंग अमेरिका और ब्रिटेन में सौन्दर्य प्रसाधनों और भोज्य पदार्थों को रंगीन बनाने में बहुतायत से उपयोग में लाया जाता है। रंग भी और शरबत भी इसका एक बेहतरीन स्रोत है | अंबाडी जो एक भाजी का नाम है इसका प्रयोग महाराष्ट्र में बहुत होता है | दक्षिण भारत में इसे गोंगूरा के नाम से पुकारा जाता है | यह मूलतः दक्षिण अफ्रीका का पौधा है | इस पर भिन्डी जैसे सुंदर पीले फूल खिलते हैं | जिस पर पांच मांसल कड़क जामुनी लाल रंग की पंखुड़ियाँ ऊपर की ओर ताज की तरह उठी होती है इसके मांसल भाग में रंग भरा होता है| अंग्रेजी में इसे रोजे लाटरी नाम दिया गया है | इससे रंग बनाने के लिए इसके आठ से दस फूल पानी में उबालकर छान लिए जाते हैं | इसे होली में प्रयोग कर सकते हैं और यदि इसमें शक्कर मिला दी जाए तो होली पर आने वाले मेहमानों को इसे पिलाया भी जा सकता है | इस सॉफ्ट ड्रिंक को आपके मेहमान कभी नहीं भूलेंगे| इसमें विटामिन ए.बी.सी सभी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। जानिए कि चुकंदर भी रंगो का सिकंदर है जिससे गुलाबी और जामुनी रंग बनाया जाता है| यह एक अत्यंत पोषक तत्व है, जो आपके रक्त को सदा स्वस्थ रख कर आपके गालों को भी प्राकृतिक रुप से गुलाबी बनाता है | आपकी ऊर्जा का समन्वय भी बढ़िया रखता है। रक्त वर्णी चन्दन का पाउडर भी रंग बनाने में उपयोग होता है, टेरोकार्पिस संतालुम नाम का एक पेड़ है जिसकी लकड़ी से यह रंग मिलता है|

नीले गुलमोहर को जैकरेंडा नाम से जाना जाता है जिसके फूल घंटीनुमा,नीले, जामुनी रंग के होते हैं, जो बजती नहीं है परंतु फिजाओं में रंग जरूर घोलती है। प्रकृति के अनेक रंग हमें सिखाते हैं कि रंग कैसा भी हो हमारी मुस्कान सदा रंग बिखेरने के लिए तैयार होनी चाहिए, जो सबके मन को खुश रखे। अतः सदा खुश रहिए | वातावरण और परिस्थिति के साथ सामंजस्य रखिए।

**-डा. स्वप्ना तिवारी**

## होली का आध्यात्मिक महत्व

नस्ल, संस्कृति और धर्म में अंतर के बावजूद, कुछ खास उत्सव त्योहार जीने के तरीके को फिर से जीवंत करते हैं और भीतर की भावना को ऊर्जा देते हैं। प्राचीन काल से भारत अपनी संस्कृति और विरासत में अद्वितीय है। यह भूमि सबसे प्रारंभिक सभ्यताओं में से एक है जो प्रकृति में रहस्यवादी है। वैदिक काल ने कुछ त्योहारों और अनुष्ठानों की शुरुआत की जिनका हम जोश और उत्साह के साथ पालन करते हैं | लेकिन जड़ और महत्त्व को भूल गए। यदि आप पीछे मुड़कर देखेंगे तो होली 3 दिनों तक मनाई जाती है। एक दिन में वे होलिका एक शैतान के रूप को जलाते हैं जो गांव या आवासीय परिसर से दूर है।

पौराणिक कथा इस प्रकार है - एक बार हिरण्यकश्यप के नाम से एक राक्षस राजा था । वह इतना अहंकारी था कि उसने सबको अपने अधीन कर लिया |केवल उसकी पूजा करने के लिए कहता था । लेकिन उनके पुत्र प्रह्लाद को बड़ी निराशा हुई,वे भगवान नारायण के एक उत्साही भक्त बन गए और उन्होंने अपने पिता की पूजा करने से इनकार कर दिया। हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र प्रह्लाद को मारने के लिए कई तरह की कोशिश की, लेकिन भगवान विष्णु ने उसे हर बार बचा लिया। अंत में, उसने अपनी बहन होलिका को प्रह्लाद को लेकर धधकती आग में प्रवेश करने के लिए कहा क्योंकि हिरण्यकश्यप जानता था कि होलिका को एक वरदान प्राप्त है, जिससे वह आग में सकुशल प्रवेश कर सकती थी। होलिका ने धोखे से छोटे प्रह्लाद को उसकी गोद में बैठने के लिए बहकाया और उसने खुद एक धधकती हुई आग में अपना आसन ग्रहण किया| उसे विश्वास था कि भगवान ब्रह्मा ने वरदान के रूप में जो एक दुपट्टा दिया था | वह उसकी आग से रक्षा करेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ| हवा से दुपट्टा उड़कर प्रह्लाद के सर पर गिर गया और प्रहलाद बच गए लेकिन होलिका जल गई | किंवदंती है कि होलिका को अपनी कुटिल इच्छा की कीमत अपने प्राण देकर चुकानी पड़ी। होलिका को खबर नहीं थी कि वरदान तभी काम करता था, जब वह अकेले आग में प्रवेश करती थी। बाद में प्रह्लाद भगवान नारायण का नाम जप करते हुए सुरक्षित बाहर निकल कर आ गए | यह इंगित करता है कि चुनौतियां हो सकती हैं लेकिन यदि आप सच्चे हैं और ईश्वर को स्वयं को समर्पित कर दिया है, तो भगवान निर्दोष लोगों को बचाता है और चुनौतियाँ अवसरों में परिवर्तित हो जाती हैं। इस प्रकार, होली का नाम होलिका से लिया गया है और, बुराई पर अच्छाई की जीत के पर्व के रूप में मनाया जाता है। होली को सदाचार की विजय के रूप में भी मनाया जाता है। जैसा कि किंवदंती दर्शाती है कि कोई भी, कितना भी मजबूत क्यों न हो, एक सच्चे भक्त को नुकसान नहीं पहुंचा सकता है और, जो सच्चे भक्त को सताने की जुर्रत करते हैं, वे भस्म हो जाते हैं।

यह इंगित करता है कि नकारात्मकता और दोषों को जला दिया जाना चाहिए। यह होली को भी इंगित करता है यानी अतीत बीत चुका है। होली जलने के अगले दिन हम रंग लगाते हैं। यह भी कहा जाता है कि जब श्री लंका विजय के बाद श्री रामचन्द्र ने अयोध्या में प्रवेश किया तो इसे भी होली के रूप में मनाया गया। विभिन्न रंग जीवन के सद्‌गुणों को दर्शाते हैं। रंग लगाने के बाद हम नहाते हैं अर्थात हमारा मन सभी छापों से साफ होना चाहिए। हम मिठाई खाते और बांटते हैं अर्थात यह हमारे जीवन की खुशहाल स्थिति और शारीरिक तंदुरूस्ती के बारे में बताता है| यह एक ऐसा त्योहार है जिसे हिंदू त्योहार के रूप में मनाया जाता है जिसके बहुआयामी निहितार्थ और बहुआयामी अर्थ हैं। मथुरा और बृजभूमि में यह उत्साह के साथ मनाया जाता है और दिखाता है कि भगवान कृष्ण और गोपियों ने रंग खेला जो आत्मा और सर्वोच्च आत्मा के बीच संबंध को इंगित करता है। जब दोनों एक हो जाते हैं, तो यह खुशी का उच्चतम क्षण होता है।

कुछ चीजों से हम बच सकते हैं| जैसे- रासायनिक और सिंथेटिक रंगों का उपयोग नहीं करना चाहिए । उत्सव के दौरान हमें शिष्टाचार को नहीं भूलना चाहिए।

**- श्री निराकार पटनायक [शिक्षक]**

## कुमाऊनी होली

कुमाऊँ उत्तराखंड का एक पर्वतीय क्षेत्र हैं, पुराणों में इसे मानस खंड के नाम से जाना गया है। यहाँ प्राकृतिक सुंदरता चारों तरफ फैली हुई है जो आसपास के वातावरण को शुद्ध तथा पवित्र बनाती है। ऊँचाईयों से गिरने वाले झरने, खूबसूरत जंगल, बर्फ से ढकी पहाड़ की चोटियाँ, यहां आने वाले पर्यटकों का स्वागत करते हैं, और उनका मन मोह लेते हैं। गाँव का असली जीवन उत्तर भारत के इस क्षेत्र में उपयुक्त रूप से देखा जा सकता है। हिमालय की सफेद चोटियों का शानदार दृश्य किसी भी आत्मा को मंत्रमुग्ध करने में सक्षम है। एक और चीज जो इस जगह को बाकियों से अलग बनाती है, वह है कुमाऊँ की होली, जो यहाँ एक विशिष्ट शैली में मनाई जाती है।कुमाऊँनी होली के संगीतमय उत्साह में उत्सव के तीन अलग-अलग रूप हैं, बैठकी होली, खड़ी होली और महिला होली। कुमाऊँनी लोगों के बीच, यह सांस्कृतिक त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाता है, तथा कृषि और किसानों के लिए भी इस त्योहार का विशेष महत्व है। कुमाऊँनी होली का उद्गम काली कुमाऊं वर्तमान चंपावत जिले से माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि चंद राजवंश के पुरोहित मंडल में शुमार सतराली (ताकुला ब्लाक) गांव में करीब 500 वर्ष पूर्व संगीत के शौकीन राजपुरोहितों ने विशुद्ध कुमाऊंनी बोली यानि आंचलिक बोली में होली गायन की परंपरा का श्रीगणेश किया। कुमाऊं की स्थानीय परंपराओं और उत्तर भारत की सांस्कृतिक परंपराओं की इस अनूठी पराकाष्ठा की शुरुआत बसंत पंचमी से होती है। कुमाऊँ में होली का यह पारंपरिक उत्सव लगभग दो महीने तक चलता है। भक्तिरस से शुरू बैठकी होली और फिर खड़ी होली विदाई लेते लेते विशुद्ध भारतीय शास्त्रीय रागों व छंदों से सजी प्रेम, हास्य व श्रृंगाररस में तर हो जाती है। यहाँ की गायन होली में समूचे भारत की गायन शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है| इसकी यह विशेषता ही इसे अपने आप में एक अलग स्थान दिलाती है। छलेड़ी लंबी अवधि की इस होली में अंतिम दिन फूलों से बने रंगों का उपयोग करके छलेड़ी होली खेली जाती है| इसमें अबीर और गुलाल जैसे रंग उपयोग किए जाते हैं तथा बच्चे पानी में रंग घोलकर बड़े उत्साह से होली खेलते हैं। छलेड़ी पर घर-घर जाकर ढोल की थाप व मंजीरे की खनक के बीच परिवार, गांव समाज की सुख समृद्ध, बेहतर स्वास्थ्य और अगले बरस फिर मिलने की कामना के साथ शुभाशीष दी जाती है।

**-त्रिलोक सिंह पी०जी०टी०**
**शारीरिक शिक्षा शिक्षक**

# अन्य –

## विचार विमर्श

विषय - 'विश्व में हिंदी और हम'

प्रिय विद्यार्थियों विचार विमर्श के इस स्तम्भ में आप दिए गए विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं। आप अपने विचार मंगल फॉन्ट, वर्ड फ़ाइल में २० अप्रैल तक भेज सकते हैं। आपके लेख को अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

## विनम्र निवेदन

ज्ञानोदय प्रभा का यह अंक ऑनलाइन प्रकाशित किया जा रहा है | हमारा प्रयास यही रहता है कि पत्रिका त्रुटि रहित हो इसके बाद भी यदि कोई भूल रह जाती है तो संपादक मंडल इसके लिए क्षमा प्रार्थी है |

## सूचना

प्रिय विद्यार्थियों आप आगामी अंक के लिए अपनी स्वरचित, मौलिक कहानी, कविताएँ, लेख आदि प्रत्येक माह की १५ तारीख तक भेज सकते हैं | श्रेष्ठ रचनाओं को पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा|

पाठक अपनी रचनाएँ - drkirtiwardhan@gmail.com पर भेजें | अथवा 9179961170 पर वाट्सएप्प करें |

# प्रतियोगिता

## कहानी पूरी करो प्रतियोगिता

प्रिय विद्यार्थियों इस स्तम्भ में आपको कहानी की प्रारंभिक पंक्तियाँ दी जा रही हैं | इसके बाद की कहानी आपको अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करके पूरी करनी है | कहानी ऐसी लिखें जो रोचक एवं उद्देश्य पूर्ण हो | कहानी का शीर्षक भी लिखें |

आज रिजल्ट घोषित होने वाला था | मन में एक रोमांच भी था और अनजाना डर भी| पता नहीं क्या होने वाला था ? मेरा मित्र रहीस मुझे और डराए जा रहा था ---------

## कविता पूरी करो प्रतियोगिता

प्रिय विद्यार्थियों इस प्रतियोगिता में कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं | इन्हें आगे बढ़ाते हुए अधूरी कविता पूरी करो और उसका शीर्षक भी लिखो |

गुजर गया वह साल आ गया नूतन वर्ष
आओ स्वागत करें जोड़ करतल सहर्ष
-----------------------

## चित्र बनाओ प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता के अंतर्गत दिए गए विषय पर एक चित्र बनाना है | सर्वश्रेष्ठ चित्र को आगामी अंक में स्थान दिया जाएगा |

विषय – गाँधी दर्शन

## जनवरी माह की चित्रकला प्रतियोगिता का परिणाम –

चित्रकला विशेषज्ञ और शिक्षक श्री प्रशांत सील द्वारा दिए गए परिणामों के आधार पर निम्नलिखित
प्रतियोगी विजयी रहे –सनी विश्वकर्मा कक्षा ५ ब ने प्रथम
,हिमानी कक्षा ५ अ ने द्वितीय और
दीपाली कक्षा ५ ब ने तृतीय स्थान प्राप्त किया |

ज्ञानेन पुंसां सकलार्थ सिद्धि :

## संपादक – मंडल

**मुख्य संरक्षक** – प्राचार्य,
ज्ञानोदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुरई

**मुख्य संपादक** – डॉ. कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव

**सह संपादक** - सुश्री आयुषी समैया

**सहयोग** - हिंदी विभाग

**तकनीकी सहायता** – श्री विशाल कटारे
एवं तकनीकी विभाग
**छायांकन** - श्री प्रशांत सील एवं विद्यार्थी


www.facebook.com/gyanodayakhurai
gyanodayaprincipal@gmail.com
www.gyanodayakhurai.org
youtube.com/UC_7RhrC1nipjZTanSKoEVEA
gyanodayakhurai/9826829441
gyanodayacampuscare.in
Gyanodaya khurai
9826829441, 07581-292149,292154


अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु क्यू र को स्केन करें|

**ज्ञानोदय सर्व मंगल विद्या मंदिर, खुरई, सागर (म.प्र.)**